

दि कर्मिक पोस्ट

Email- thekaarmiicpost@gmail.com

Global
School Of
Excellence,
Obedullaganj

वर्ष : 12, अंक : 9

(प्रति बुधवार),

इन्दौर, 25 फरवरी 2026 से 3 मार्च 2026

पेज : 8

कीमत : 3 रुपये

बर्फ के नीचे छिपा 'कार्बन बम' हुआ सक्रिय, क्या बढ़ सकती है ग्लोबल वार्मिंग की रफ्तार

नई दिल्ली। आर्कटिक और अंटार्कटिक में पिघलती बर्फ के नीचे हजारों वर्षों से जमे सूक्ष्मजीव अब तेजी से सक्रिय हो रहे हैं और वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड व मीथेन जैसी ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन बढ़ा रहे हैं। मैकगिल यूनिवर्सिटी से जुड़ी अंतरराष्ट्रीय समीक्षा में चेतावनी दी गई है कि पर्माफ्रॉस्ट के पिघलने से न सिर्फ कार्बन बम सक्रिय हो सकता है, बल्कि पारे जैसे जहरीले तत्व भी मुक्त होकर नदियों और खाद्य श्रृंखला में फैल सकते हैं।

निष्कर्ष संकेत देते हैं कि जलवायु संकट अब सतह से कहीं गहराई में आकार ले रहा है। धरती के सबसे सर्द और शांत ध्रुवीय इलाकों में जमी बर्फ के नीचे एक अदृश्य हलचल तेज हो रही है, चिंता की बात है कि यह हलचल जलवायु परिवर्तन को और खतरनाक बना सकती है। मैकगिल यूनिवर्सिटी से जुड़े वैज्ञानिकों द्वारा किए एक नए अध्ययन में सामने आया है कि जैसे-जैसे आर्कटिक और अंटार्कटिक में जमा बर्फ पिघल रही है, वैसे-वैसे वहां हजारों वर्षों से छिपे सूक्ष्मजीव (माइक्रोब्स) तेजी से सक्रिय हो रहे हैं। इनकी बढ़ती गतिविधि वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन जैसी ग्रीनहाउस गैसों का प्रवाह बढ़ा रही है, जिससे वैश्विक तापमान में और इजाफा हो सकता है। वैज्ञानिकों ने आशंका जताई है कि यह बदलाव जलवायु संकट को नई दिशा दे सकता है। अध्ययन के मुताबिक जैसे-जैसे ग्लेशियर, पर्माफ्रॉस्ट (जमी हुई मिट्टी) और समुद्री बर्फ पिघल रही है, वैसे-वैसे इन ठंडे इलाकों में रहने वाले सूक्ष्मजीवों की गतिविधि तेज हो रही है। वैज्ञानिकों ने पाया है कि तापमान बढ़ने से इन सूक्ष्म जीवों का चयापचय



(मेटाबॉलिज्म) तेज हो जाता है, जिससे वे मिट्टी में जमे कार्बनिक पदार्थ को तेजी से तोड़ते हैं। इस प्रक्रिया में बड़ी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन जैसी ग्रीनहाउस गैसों वातावरण में पहुंच रही हैं, जो वैश्विक तापमान में हो रही वृद्धि (ग्लोबल वार्मिंग) को और तेज कर सकती हैं। वैज्ञानिकों ने इस बात की भी आशंका जताई है कि पिघलती बर्फ में लम्बे समय से जमा पारे (मरकरी) जैसे जहरीले तत्व भी मुक्त हो सकते हैं। ये नदियों और खाद्य श्रृंखला के जरिए दूर-दराज के इलाकों तक फैल सकते हैं, जिससे मानव स्वास्थ्य और खाद्य सुरक्षा पर असर पड़ सकता है। अध्ययन से जुड़े शोधकर्ता स्कॉट सुगडेन का इस बारे में कहना है, ठंडे पारिस्थितिक तंत्रों में छिपी सूक्ष्म दुनिया अब तेजी से करवट ले रही है। उन्होंने आगाह किया कि, इन बदलावों का असर केवल वैश्विक कार्बन चक्र तक सीमित नहीं रहेगा। इसका प्रभाव मानव समुदायों, खाद्य, आजीविका, और जहरीले तत्वों के फैलाव पर

भी पड़ेगा। चिंता की बात है कि ये पारिस्थितिक तंत्र जितनी तेजी से बदल रहे हैं, उतनी तेजी से हम उन्हें समझ नहीं पा रहे हैं। अपनी इस समीक्षा में शोधकर्ताओं ने आर्कटिक, अंटार्कटिक, अल्पाइन और उप-आर्कटिक क्षेत्रों के दर्जनों अध्ययनों का विश्लेषण किया है। इनकी मदद से उन्होंने यह समझने का प्रयास किया है कि तापमान और पोषक तत्वों की उपलब्धता सूक्ष्मजीवों की गतिविधि को कैसे प्रभावित कर रही है। शोधकर्ताओं को अलग-अलग क्षेत्रों में दो समान पैटर्न दिखाई दिए। जमे हुए वातावरण में सूक्ष्मजीवों की गतिविधि भोजन और तापमान, दोनों से सीमित रहती है। लेकिन जैसे ही पर्माफ्रॉस्ट और जमा बर्फ पिघलती है और पानी के बहाव के साथ पोषक तत्व फैलने लगते हैं, ये सीमाएं सिकुड़ने लगती हैं। इससे सूक्ष्मजीव अधिक सक्रिय हो जाते हैं, कार्बन चक्र की रफ्तार तेज होती है और मिट्टी में जमा प्रदूषक तत्व भी बाहर निकल सकते हैं। नतीजतन, कार्बन चक्र की रफ्तार बढ़ती है और दशकों

से जमा कार्बन तेजी से वातावरण में पहुंचने लगता है। वैज्ञानिकों के मुताबिक ये बदलाव सिर्फ ध्रुवीय क्षेत्रों तक सीमित नहीं रहेंगे। कार्बन उत्सर्जन, जहरीले तत्वों का प्रसार और पारिस्थितिक तंत्र में बदलाव का असर वैश्विक जलवायु, मानव समुदायों, आजीविका और आय सुरक्षा पर भी पड़ सकता है। समीक्षा में यह भी सामने आया है कि नतीजों को प्रभावित करने वाले कुछ अन्य कारक भी हैं। इनमें ऑक्सीजन की उपलब्धता और यह बात शामिल है कि पिघलने के बाद जमीन ज्यादा गीली होती है या सूखी। ये परिस्थितियां तय करती हैं कि सूक्ष्मजीवों का व्यवहार कैसा होगा और वे कितनी तेजी से सक्रिय होंगे। हालांकि वैज्ञानिक मानते हैं कि सूक्ष्मजीव जलवायु फीडबैक चक्र में

महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, लेकिन ध्रुवीय माइक्रोबायोलॉजी का क्षेत्र अभी नया है। पिछले करीब 20 वर्षों के ही आधारभूत आंकड़े उपलब्ध हैं। ऐसे में लंबे समय के जलवायु प्रभावों का सटीक अनुमान लगाना मुश्किल हो जाता है। इसके अलावा, तीन बड़ी चुनौतियां सामने आई हैं, शोध अधिकतर उन्हीं क्षेत्रों में केंद्रित है जहां बुनियादी ढांचा मौजूद है, जबकि आर्कटिक और अंटार्कटिक के बड़े हिस्से अब भी बहुत कम अध्ययन किए गए हैं। इसके साथ ही चरम मौसम और सीमित रोशनी के कारण यहां सर्दियों में फील्डवर्क मुश्किल हो जाता है। स्कॉट का कहना है, दूसरे क्षेत्रों में हम किसी प्रजाति का रिकॉर्ड सैकड़ों साल पीछे तक देख सकते हैं, लेकिन यहां हमारे पास इतना लंबा इतिहास नहीं है। हमारे शुरुआती आंकड़े 2000 के दशक की शुरुआत से ही मिलते हैं। ऐसे में जलवायु पूर्वानुमानों को अधिक सटीक बनाने के लिए शोधकर्ताओं ने वैश्विक निगरानी प्रयासों में बेहतर समन्वय की जरूरत बताई है। साथ ही उन्होंने आंकड़ों के संग्रह की किफायती और आसानी से उपलब्ध तकनीकों के ज्यादा इस्तेमाल पर जोर दिया है, ताकि ज्यादा और बेहतर जानकारी जुटाई जा सके। ध्रुवीय बर्फ के नीचे चल रही यह अदृश्य हलचल साफ संकेत दे रही है कि जलवायु संकट अब सतह पर दिखने वाले बदलावों से कहीं गहरा है। ध्रुवीय क्षेत्रों में सक्रिय होते सूक्ष्मजीव इस बात का संकेत हैं कि जलवायु परिवर्तन रैखिक नहीं, बल्कि परस्पर जुड़े जटिल चक्रों का परिणाम है।

जलवायु संकट-जैसे-जैसे धरती गर्म हो रही है, प्रकृति का इंजन धीमा हो रहा है

मुंबई। हमारे ग्रह पर जलवायु तेजी से बदल रही है। तापमान बढ़ रहा है, मौसम के पैटर्न बदल रहे हैं और पर्यावरणीय परिस्थितियां लगातार अस्थिर हो रही हैं। पिछले कई सालों में वैज्ञानिकों का मानना था कि जैसे-जैसे धरती गर्म होगी, प्रकृति भी तेजी से बदलती जाएगी। जानवर और पौधे नए स्थानों पर जाएंगे, कुछ क्षेत्रों से गायब होंगे और पारिस्थितिक तंत्र में लगातार परिवर्तन होगा।

लेकिन हाल ही में क्रीन मैरी यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन के शोध में पता चला है कि हकीकत इससे बिल्कुल अलग है। शोध के अनुसार, पारिस्थितिक तंत्र में प्रजातियों का बदलना, जिसे टर्नओवर कहते हैं, अब धीमा हो गया है। 1970 से आंकड़े दिखाते हैं कि जलवायु परिवर्तन के बावजूद समुद्री, मीठे पानी और जमीन के पारिस्थितिक तंत्र में प्रजातियों का टर्नओवर लगभग एक-तिहाई कम हुआ है। नेचर कम्युनिकेशंस में प्रकाशित शोध में 20वीं सदी के अंतिम सौ सालों के दौरान समुद्री, मीठे पानी और जमीन पर रहने वाले जीवों के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। शोधकर्ताओं ने देखा कि 1970 के बाद, जब वैश्विक तापमान तेजी से बढ़ने लगा, प्रजातियों के बदलने की गति कम हो गई। शोध पत्र में शोधकर्ता के हवाले से कहा गया है कि प्रकृति एक आत्म-मरम्मत इंजन की तरह काम करती है, जो पुराने हिस्सों को बदलकर नए हिस्सों से बदलती रहती है। लेकिन अब यह इंजन धीरे-धीरे रुक रहा है। 1970 से आंकड़े दिखाते हैं कि जलवायु परिवर्तन के बावजूद समुद्री, मीठे पानी और जमीन के पारिस्थितिक तंत्र में प्रजातियों का टर्नओवर लगभग एक-तिहाई कम हुआ है। टर्नओवर की दर लगभग एक-तिहाई कम हो गई है। यह प्रभाव बहुत ही अलग-अलग पर्यावरणों में देखा गया, जैसे कि जमीन पर पक्षियों से लेकर महासागर की गहराई तक।

शोधकर्ताओं ने यह समझने की कोशिश की कि टर्नओवर धीमा क्यों हो रहा है। उन्होंने पाया कि पारिस्थितिक तंत्र केवल बाहरी पर्यावरणीय बदलावों का पालन नहीं करता। कई समुदाय मल्टीपल अट्रैक्टर्स अवस्था में काम करते हैं। 1970 से आंकड़े दिखाते हैं कि जलवायु परिवर्तन के बावजूद समुद्री, मीठे पानी और जमीन के पारिस्थितिक तंत्र में प्रजातियों का टर्नओवर लगभग एक-तिहाई कम हुआ है।

इस सिद्धांत के अनुसार, प्रजातियां आपस में प्रतिस्पर्धा के कारण लगातार बदलती रहती हैं। यह कुछ हद तक रॉक, पेपर, सिजर्स के खेल जैसा है, जहां कोई भी प्रजाति लंबे समय तक पूरी तरह से हावी नहीं होती। इस शोध ने यह साबित किया कि यह प्राकृतिक प्रक्रिया वास्तविक दुनिया में मौजूद है और पारिस्थितिक तंत्र को चलाती है। यदि आंतरिक प्रक्रियाएं सामान्यतः पारिस्थितिक तंत्र को गतिशील रखती हैं, तो टर्नओवर धीमा क्यों हो गया? शोध में कहा गया है कि मानवजनित गतिविधियों और प्रजातियों के क्षेत्रीय पूल में कमी इसका मुख्य कारण है। 1970 से आंकड़े दिखाते हैं कि जलवायु परिवर्तन के बावजूद समुद्री, मीठे पानी और जमीन के पारिस्थितिक तंत्र में प्रजातियों का टर्नओवर लगभग एक-तिहाई कम हुआ है। एक स्वस्थ पारिस्थितिक तंत्र में बड़ी संख्या में प्रजातियां उपलब्ध होती हैं, जो नई जगहों पर जाकर समुदाय में शामिल हो सकती हैं। लेकिन जैसे-जैसे मानवजनित गतिविधियों से निवास स्थान क्षतिग्रस्त होता है और जैव विविधता घटती है, संभावित नई प्रजातियों की संख्या कम हो जाती है। परिणामस्वरूप, टर्नओवर धीमा हो जाता है।

प्रदेश में उपलब्ध बजट को पांच साल में दोगुना करने के लक्ष्य के साथ राज्य सरकार कर रही है कार्य

भोपाल (एजेंसी)मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि शिक्षा को जीवन के अनुभवों से जोड़ते हुए समयानुकूल बनाना आवश्यक है। व्यक्ति को आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनाने में सक्षम शिक्षा व्यवस्था ही देश को समृद्ध और सशक्त बनाएगी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में लागू राष्ट्रीय शिक्षा नीति इन्हीं उद्देश्यों की प्राप्ति की दिशा में सार्थक प्रयास है। शिक्षा व्यवस्था की जटिलता को कम करना भी नीति का उद्देश्य है। प्रसन्नता का विषय है कि मध्यप्रदेश, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू करने में देश में अग्रणी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव कर्मयोगी बनें की सर्वोच्च परामर्शदात्री समिति की एक दिवसीय कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में दीप प्रज्वलित करने के साथ माँ सरस्वती के चित्र पर पुष्प अर्पित कर शुभारंभ किया। कार्यक्रम में उच्च शिक्षा मंत्री श्री इंद्र सिंह परमार, अपर मुख्य सचिव श्री अनुपम राजन उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमारे विश्वविद्यालय केवल डिग्री प्रदान करने के केंद्र नहीं हैं, राष्ट्र के भविष्य की कार्यशालाएं हैं। भगवद्गीता में कहा गया है कि कर्म को उत्कृष्टता और दक्षता के साथ करना ही योग है। आज जब हम कर्म योगी शिक्षाविद् की बात करते हैं, तो हम केवल एक आदर्श नहीं गढ़ रहे, बल्कि एक ऐसे शैक्षणिक वातावरण का निर्माण करना चाहते हैं, जहाँ शिक्षक केवल पाठ न पढ़ाए, बल्कि प्रेरणा दें। संस्थान नियमों के साथ उद्देश्य पूर्ति के लिये संचालित हों। विद्यार्थी केवल नौकरी न खोजें, बल्कि राष्ट्र-निर्माण में भागीदार बनें। हमें शिक्षण को अधिक प्रासंगिक और जीवन सापेक्ष बनाना होगा। अनुसंधान की सामाजिक उपयोगिता पर भी और ध्यान अपेक्षित है। डिग्री और रोजगार के बीच जो दूरी है, उसे हमें खत्म करना होगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमारा प्रदेश कृषि प्रधान राज्य है, इसे दृष्टिगत रखते हुए सभी विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में कृषि संकाय आरंभ किया गया है। प्रदेश में औद्योगिक गतिविधियों का लगातार विस्तार हो रहा है। इससे प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित उद्योगों में अलग-अलग दक्षता वाले कर्मियों की आवश्यकता है। राज्य सरकार ऐसे क्षेत्रों में उद्योगों की आवश्यकता के अनुरूप वहां के इंजीनियरिंग कॉलेजों, पॉलिटेक्निक, आईटीआई आदि तकनीकी

संस्थाओं में कोर्स आरंभ कर रही है। इससे युवाओं को स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे और युवा अपनी क्षमता और योग्यता का बेहतर उपयोग कर सकेंगे। इन्हीं गतिविधियों से कर्मयोगी बनने का स्वप्न साकार होगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में उपलब्ध बजट को 5 वर्ष में दोगुना करने के लक्ष्य के साथ राज्य सरकार कार्य कर रही है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए चरणबद्ध रूप से पांच लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। हर वर्ष एक क्षेत्र पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है। इस क्रम में वर्ष 2026 को कृषक कल्याण वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इसमें ग्रामीण अर्थव्यवस्था से सम्बद्ध 16 विभागों के लक्ष्य समग्र रूप से तय किए गए हैं। इससे किसान की आय को दोगुना करने का राज्य सरकार का संकल्प भी पूर्ण होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमें सहकर्मि संस्कृति को पुनर्जीवित करना होगा। गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि अपने कर्तव्य का पालन ही श्रेष्ठ है। हमने अभ्युदय मध्यप्रदेश का जो संकल्प लिया है, उसमें शिक्षा केंद्रीय भूमिका निभाती है। हम यदि 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमें विकसित विश्वविद्यालयों का निर्माण करना होगा। मध्यप्रदेश को मूल्य आधारित, गुणवत्ता संपन्न और रोजगार सक्षम शिक्षा का मॉडल राज्य बनाना हमारा लक्ष्य है। %कर्मयोगी बनें% कार्यशाला इसी दिशा में एक गंभीर और प्रतिबद्ध प्रयास है। कार्यशाला में मिशन कर्मयोगी के सदस्य प्रो. आर. बालासुब्रमणियम, जेएनयू नई दिल्ली की कुलपति प्रो. शांतिश्री धुलिपुडी पंडित, यूनाइटेड कॉन्शियसनेस के कन्वीयर डॉ. विक्रान्त सिंह तोमर, आयुक्त उच्च शिक्षा श्री प्रबल सिपाहा, एपेक्स एडवाइजरी कमेटी के सदस्य, देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के कुलगुरु, कुलसचिव और शिक्षाविद उपस्थित थे।

चिंताजनक ई-वेस्ट कुप्रबंधन से पर्यावरण ही नहीं कीमती खनिज भी हो रहे नष्ट, समुचित डाटा भी सार्वजनिक नहीं

नई दिल्ली। भारत का ई-वेस्ट कुप्रबंधन अब केवल पर्यावरणीय चिंता नहीं, बल्कि देश के ग्रीन ट्रांजिशन के लिए सीधा खतरा बनता जा रहा है। पर्यावरण संगठन टॉक्सिक लिंक की नई रिपोर्ट लॉन्ग रोड टू सर्कुलरिटी ने खुलासा किया है कि विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व (ईपीआर) नीति जमीन पर प्रभावी साबित नहीं हो पा रही, जिसके चलते ई-कचरे में लिथियम, नियोडिमियम और डिस्प्रेसियम जैसे बहुमूल्य खनिज नष्ट हो रहे हैं और भारत अपनी ही संसाधन क्षमता गंवा रहा है।

इलेक्ट्रॉनिक कचरा या ई-कचरा उन सभी विद्युत और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों तथा उनके हिस्सों से बनता है, जिन्हें उपयोग के बाद फेंक दिया जाता है। मोबाइल फोन, कंप्यूटर, टीवी, घरेलू उपकरण और औद्योगिक इलेक्ट्रॉनिक्स इसके प्रमुख स्रोत हैं। इनमें मौजूद कीमती धातुएं और खनिज यदि वैज्ञानिक तरीके से पुनर्प्राप्त न किए जाएं, तो वे पर्यावरणीय जोखिम पैदा करने के साथ आर्थिक नुकसान का कारण भी बनते हैं। रिपोर्ट के अनुसार ईपीआर मॉडल को ई-वेस्ट प्रबंधन की आधारशिला माना जाता है, लेकिन मौजूदा व्यवस्था केवल चार धातुओं सोना, तांबा, लोहा और एल्युमिनियम की रिकवरी को अनिवार्य बनाती है। इसके चलते नियोडिमियम, डिस्प्रेसियम और लिथियम जैसी कई महत्वपूर्ण और महंगी धातुएं प्रणाली से बाहर रह जाती हैं और अंततः नष्ट हो जाती हैं। ये वही खनिज हैं जो बैटरी निर्माण, इलेक्ट्रिक वाहनों और नवीकरणीय ऊर्जा तकनीकों के लिए बेहद जरूरी माने जाते हैं। टॉक्सिक लिंक का आकलन है कि इस अधूरे रिकवरी फ्रेमवर्क के कारण भारत अपने ही ई-वेस्ट से भविष्य की हरित अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक संसाधन वापस हासिल नहीं कर पा रहा। अध्ययन में ई-वेस्ट नियमों की समीक्षा करते हुए उनके प्रभावी क्रियान्वयन में आ रही व्यावहारिक बाधाओं को रेखांकित किया गया है। उपभोक्ताओं में जागरूकता की कमी, ई-वेस्ट से जुड़े वित्तीय प्रवाह का सही हिसाब न होना और कमजोर निगरानी व्यवस्था जैसी समस्याएं लगातार बनी हुई हैं। रिपोर्ट के अनुसार, ईपीआर पोर्टल पर समुचित डाटा



उपलब्ध नहीं है। छोटे निर्माताओं, ऑनलाइन विक्रेताओं और ग्रे-मार्केट आयातकों को प्रणाली से बाहर रखा गया है, जिससे पूरे सेक्टर की वास्तविक तस्वीर सामने नहीं आ पाती। वित्त वर्ष 2023-24 और 2024-25 में अनुपालन न करने पर लगाए गए जुर्माने और पर्यावरणीय क्षतिपूर्ति से संबंधित जानकारी भी नहीं है। टॉक्सिक लिंक के एसोसिएट डायरेक्टर सतीश सिन्हा ने कहा कि ईपीआर भारत के ई-वेस्ट प्रबंधन ढांचे की बुनियाद जरूर है, लेकिन केवल सिद्धांत से अपेक्षित परिणाम नहीं मिल सकते। उनके अनुसार इसके साथ एक मजबूत कचरा संग्रह प्रणाली, अनौपचारिक क्षेत्र का एकीकरण, उच्च-तकनीक रीसाइक्लिंग सुविधाओं का विकास और व्यापक जन-जागरूकता अभियान जरूरी हैं, ताकि पूरे सिस्टम में पारदर्शिता और जवाबदेही लाई जा सके।

राजधानी की आबोहवा होगी और साफ, जलवायु बजट पेश करने वाला देश का दूसरा शहर बना शिमला

शिमला हिल्स क्वीन शिमला की आबोहवा अब और साफ होगी। शहर में न सिर्फ हरियाली बढ़ेगी बल्कि सफाई भी बेहतर होगी। नगर निगम शिमला जलवायु बजट पेश करने वाला देश का दूसरा शहर बन गया है। इससे पहले मुंबई ने ऐसा बजट पेश किया था। बचत भवन में शुक्रवार को वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए निगम ने कुल 688 करोड़ रुपये का बजट पारित किया। खास बात यह है कि निगम ने कुल बजट का 13 फीसदी यानि की 74 करोड़ रुपया जलवायु से जुड़ी



परियोजना के लिए रखा है। यह पहली बार है जब जलवायु को लेकर बजट में प्रावधान किया गया है। नगर निगम का कहना है कि इस राशि से 35 तरह के नए कार्यों से शहर को स्वच्छ और हरित बनाने की दिशा में काम किया जाएगा।

देशभर में राजधानी शिमला पर्यटन की दृष्टि से काफी मशहूर है। हर साल लाखों लोग सैलानी यहां पर हर मौसम में घूमने के लिए आते हैं। वहीं यहां की सुंदर व मनमोहक नजारों का आनंद लेते हैं। ऐसे में शहर की जलवायु बेहतर हो, इसके लिए नगर निगम ने अपने बजट में लोगों को कई सपने दिखाए हैं। निगम के 74 करोड़ के जलवायु बजट में से 28 फीसदी राशि ग्रीन हाउस क्षेत्र के लिए रखी है। इसके तहत सौर उर्जा को बढ़ावा देना है। बिजली की बचत करने वाली लाइटें और कार्बन उत्सर्जन को लेकर आने वाले दिनों में काम किए जाएंगे। ठोस अपशिष्ट प्रबंधन में 22 फीसदी बजट खर्च होगा। इसमें कचरे

का वैज्ञानिक तरीके से निस्तारण किया जाएगा। वायु गुणवत्ता सुधार के लिए 21 फीसदी बजट खर्च होगा। कम प्रदूषण वाले वाहनों को बढ़ावा देने को लेकर काम किया जाएगा। शहरी योजना हरियाली और जैव विविधता क्षेत्र के लिए जलवायु बजट का 19 फीसदी हिस्सा खर्च किया जाएगा। इसमें शहर में पौधरोपण, पार्कों के विकास और प्राकृतिक जल निकासी तंत्र को मजबूत किया जाएगा। जल प्रबंधन के लिए जलवायु बजट से 10 फीसदी राशि खर्च होगी। इसमें वर्षा जल संचयन, पानी बचाने की योजनाएं और जल आपूर्ति व्यवस्था पर ध्यान रखा जाएगा।

पारिस्थितिकी तंत्र में सहयोगी पशु पक्षियों के संरक्षण के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध- मुख्यमंत्री डॉ यादव

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने लुसप्राय प्रजातियों के 5 गिद्धों को हलाली डेम जल क्षेत्र में किया मुक्त

मध्यप्रदेश में उपग्रह टेलीमेट्री जैसे नवाचारों से निरंतर बढ़ रही गिद्ध संख्या

भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सोमवार को हलाली डेम क्षेत्र में लुसप्राय प्रजाति के 5 गिद्धों को प्राकृतिक आवास में मुक्त किया। इनमें चार भारतीय गिद्ध (जिप्स इंडिकस) और एक सिनेरियस गिद्ध (एजिपीयस मोनाकस) शामिल हैं। इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पारिस्थितिकी तंत्र में सहयोगी पशु पक्षियों के संरक्षण के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध है। मध्यप्रदेश जहां बाघ, तेंदुआ और अन्य वन्य प्राणियों की सर्वाधिक संख्या वाला राज्य है वहीं गिद्ध संरक्षण में भी देश में प्रथम है। मध्यप्रदेश में सभी प्रांतों से अधिक संख्या में गिद्ध पाए जाते हैं। इनमें प्रवासी गिद्ध भी शामिल हैं। पारिस्थितिकी तंत्र में इन पक्षियों का विशेष योगदान है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने वन विभाग और स्थानीय प्रशासन को गिद्ध पक्षी संरक्षण के प्रयासों के लिए बधाई दी।

इस अवसर पर बताया गया कि उच्च परिशुद्धता वाले जीपीएस-जीएसएम उपग्रह ट्रांसमीटरों से सुसज्जित पाँच दुर्लभ प्रजाति के गिद्धों को भोपाल स्थित गिद्ध संरक्षण प्रजनन केंद्र में व्यवस्थित अनुकूलन और अवलोकन अवधि के बाद मुक्त किया गया है। टैगिंग प्रक्रिया सभी संबंधित संस्थाओं एवं वन विभाग के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में वाइल्डलाइफ एसओएस के वन्यजीव पशु चिकित्सक की देख-रेख में हुई है।



यह पहल मध्य भारत के विकसित होते 'गिद्ध परिदृश्य' को समझने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। जहाँ भारतीय गिद्ध सामान्यतः एक ही क्षेत्र में रहते हैं, वहीं सिनेरियस गिद्ध मध्य एशियाई प्लेई-वे के अंतर्गत लंबी दूरी का प्रवास करते हैं, जो 30 से अधिक देशों तक फैला विश्व का एक प्रमुख प्रवासी पक्षी गलियारा है। पक्षी संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए मध्यप्रदेश के वन विभाग ने डब्ल्यूडब्ल्यूएफ-इंडिया और बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी के सहयोग से गिद्धों की गतिविधियों और निगरानी के लिए उपग्रह टेलीमेट्री कार्यक्रम प्रारंभ किया है। टेलीमेट्री से प्राप्त आंकड़ों के माध्यम से गिद्धों के भू-दृश्य उपयोग, आवागमन पैटर्न और मानव-जनित दबावों के प्रति उनकी प्रतिक्रिया के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। इससे प्रमुख पड़ाव स्थलों और भोजन क्षेत्रों की पहचान, संरक्षित एवं मानव-प्रधान क्षेत्रों में उनकी पारिस्थितिकी को समझने तथा बिजली के झटके, विषाक्तता और आवास क्षरण जैसे उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों की पहचान करने में सहायता मिल रही है। इस प्रक्रिया में संग्रहित वैज्ञानिक प्रमाण अधिक प्रभावी खतरा-निवारण रणनीतियाँ विकसित करने और सीमा-पार सहयोग सहित भू-दृश्य स्तर पर संरक्षण योजनाओं को सशक्त बनाने में सहायक होंगे।

मध्यप्रदेश में उपग्रह टेलीमेट्री से गिद्ध संरक्षण की एकीकृत डेटा-आधारित एवं भू-दृश्य स्तरीय संरक्षण का पारिस्थितिकी तंत्र विकसित हुआ है। इससे लुसप्राय गिद्ध प्रजातियों

का संरक्षण होगा और पर्यावरणीय स्वास्थ्य के प्रहरी के रूप में उनकी भूमिका भी दीर्घकालिक रूप से सुनिश्चित होगी। भारतीय परंपरा में गिद्धों को शक्ति और सम्मान का प्रतीक माना गया है। रामायण में उल्लेख है कि जटायु ने रावण से माता सीता की रक्षा के प्रयास में आत्मोत्सर्ग कर दिया। रामायण में ही उसके भाई सम्पाती की भी कथा है, जिसने अपने छोटे भाई जटायु को सूर्य की तपन से बचाते हुए बलिदान दे दिया था। पर्यावरण पारिस्थितिकी तंत्र में गिद्ध प्रकृति के सफाईकर्मी के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। गिद्ध पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में सहायक हैं, साथ ही बीमारियों के प्रसार को रोकने में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। मध्यप्रदेश लंबे समय से देश में गिद्धों की समृद्ध आबादी का केंद्र रहा है। प्रदेश में भारतीय गिद्ध (लॉन्ग-बिल्ड वल्चर), सिनेरियस गिद्ध (ब्लैक वल्चर), मिस्र गिद्ध (व्हाइट स्कैवेंजर वल्चर) और हिमालयन ग्रिफॉन जैसी प्रजातियाँ पाई जाती हैं। हाल ही में वल्चर एस्टिमेशन-2026 के पहले दिन दक्षिण पन्ना वन प्रभाग में एक हजार से अधिक गिद्धों का अवलोकन किया गया, जो हाल के वर्षों में सर्वाधिक संख्या है। कार्यक्रम में वरिष्ठ विधायक डॉ. प्रभुराम चौधरी, जिला पंचायत पदाधिकारी श्री यशवंत मीणा, श्री राकेश शर्मा के अलावा सुश्री राजो मालवीय सहित जनप्रतिनिधि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री कमलेश बहादुर सिंह ने किया।

प्लास्टिक बोतलों के ढक्कनों से फैलते प्रदूषण पर सख्त हुआ एनजीटी, कंपनियों को जारी नोटिस

न्यूयार्क। प्लास्टिक कचरे की समस्या का एक अनदेखा पहलू अब अदालत की दहलीज तक पहुंच गया है। पैकेज्ड ड्रिंकिंग वॉटर, कोल्ड ड्रिंक और अन्य पेय पदार्थों की बोतलों में बड़े पैमाने पर इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक के ढक्कन भी पर्यावरण के लिए संकट बन रहे हैं। इस गंभीर मुद्दे पर 20 फरवरी 2026 को नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) में सुनवाई हुई। याचिकाकर्ता के वकील ने ट्रिब्यूनल को बताया कि प्लास्टिक की बोतलों तो किसी हद तक इकट्ठा कर ली जाती हैं, लेकिन उनके अलग हो जाने वाले ढक्कन अक्सर कचरे में बिखर जाते हैं। ये छोटे प्लास्टिक कैप न तो ठीक से एकत्र होते हैं और न ही रिसाइकिल, जिससे वे मिट्टी और जल स्रोतों को प्रदूषित कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि कई देशों में अब टेडर्ड कैप यानी बोतल से जुड़े रहने वाले ढक्कन इस्तेमाल किए जा रहे हैं। इन ढक्कनों को बोतल से अलग नहीं किया जा सकता, जिससे वे बोतल के साथ ही वापस एकत्र हो जाते हैं और पर्यावरण में नहीं बिखरते।

इस मामले की गंभीरता को देखते हुए एनजीटी ने केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) समेत कई बड़ी कंपनियों को नोटिस जारी किया है। इनमें कोका-कोला इंडिया, बिसलेरी इंटरनेशनल, हिंदुस्तान यूनिलीवर और पेप्सिको इंडिया होल्डिंग जैसे बड़े नाम शामिल हैं। इन सभी पक्षों को अगली सुनवाई से कम-से-कम एक सप्ताह पहले अपना जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया गया है। गौरतलब है कि प्लास्टिक कचरे को एकत्र करने और एक्सटेंडेड प्रोड्यूसर रिस्पॉन्सिबिलिटी (ईपीआर) सिस्टम के रेगुलेशन से जुड़ा एक मामला पहले ही ट्रिब्यूनल के सामने लंबित है। इन दोनों मामलों को एक साथ सुनने का फैसला करते हुए अगली तारीख 26 फरवरी 2026 तय की है। यह सुनवाई साफ संकेत देती है कि अब प्लास्टिक प्रदूषण के छोटे-छोटे स्रोतों पर भी सख्ती बढ़ेगी, क्योंकि प्लास्टिक का एक छोटा ढक्कन भी बड़े पर्यावरणीय संकट की वजह बन सकता है।